अचानक बाहर किसी चीज़ के गिरने का धमाका हुआ । शायद कोई संतरी अंधेरे में ठोकर खाकर गिर पड़ा था । बनमानुस ने झट बन्दूक फेंक दी और उछलकर छोलदारी से बाहर निकल गया । अब अफ़सर साहब के होश ठिकाने हुए । बिछावन से उठे , बन्दूक संभाली ; बाहर निकले और बिजली की लालटेन लेकर बनमानुस को तलाश करने लगे । लेकिन वह वहां कहाँ था । मगर इससे ज्यादा ताज्जुब की बात यह थी कि उस संतरी का भी कहीं पता न था , जो पहरा दे रहा था । शिकारी ने अबकी संतरी को ताकीद करदी कि खूब होशियार रहे , मगर सोने की हिम्मत न पड़ी । बिजली की रोशनी में बैठे बैठे गपसप करके रात काटी । दूसरे दिन तड़के सब लोग शिकार करने चले ।